## नींद मे रेलगाड़ी

भोर की गाढ़ी नींद में
कोई सपना प्रवेश करता है
गुप्तचर की तरह
और पकड़ा जाता है
भोर की नींद के उचटते ही

यह सपना सदियों से
पीछा कर रहा है नींद का
और जब उसके पकड़े जाने के बाद
कसती है मुट्ठी
तो वह रेत बन जाता है

सपने रेत की तरह
पड़े रहते हैं चौड़े तटों पर
और बहती रहती है नींद
नदी की तरह

कितना प्यारा मजाक है
बुजुर्गों के जमाने से
चली आ रही यह बात
कि नदी का पेट
कभी मापा नहीं जा सकता

नींद में आती है रेलगाड़ी
जिसे समय रहते
पकड़ा न गया तो
अनर्थ हो जायेगा

एक आदमी दौड़ रहा है
पूरे दमखम से
उसके प्लेटफार्म तक आते - आते
आगे बढ़ चुकी होती है रेलगाड़ी
छुक - छुक, छुक - छुक रेलगाड़ी

शायद वह आदमी
नौकरी के इंटरव्यू के लिए
नहीं पहुंच पायेगा
और नौकरी का सपना
उसकी आंखों में
रेत सा पसर जायेगा

सपने में आता है एक जहाज
पानी वाले जहाज में चढ़कर
जाना था जिस आदमी को
सात समुंदर पार
वह बेतहाशा दौड़ता हुआ आता है
कि इसके पहले ही
लंगर उठ चुका होता है

नदी के तट और चौड़े होते है
नदी के बीच ही
उभर आता है रेतीला टापू

सपने में एक आदमी को
मिलता है इम्तहान का पर्चा
पर्चे के सवाल देख
आदमी के हाथ के तोते
उड़ जाते हैं
कि किसी भी सवाल का जवाब
उसे नहीं आता है

अब नींद में रेत ही ज्यादा है
पानी बहुत कम
सपने में नदी पर होता है
एक बड़ा लम्बा पुल
जिस पर चलती है रेलगाड़ी
छुक - छुक, छुक - छुक रेलगाड़ी

रेलगाड़ी में बैठा कोई मुसाफिर
नदी को देखकर हाथ जोड़ता है
एक लड़की, दायें हाथ से
छाती से माथे तक, और फिर
दोनों कंधों को छूती
एक क्रॉस बनाती है
और अपना रेशमी स्कार्फ
दुबारा कसकर बांधती है

रेलगाड़ी नदी के उपर से
गुजरती है तभी कोई नौजवान
एक सिक्का उछाल देता है नदी में

भोर की गाढ़ी नींद में डूबा हुआ
वह आदमी - बस प्यार से देखता है नदी को।

# आने वाले दिनों में कविता

थक चुकी होगी वह
नहीं पूछेंगे लोग उसे
कौड़ी के मोल
माना कि क्रांति-बीज के
भ्रूण नहीं तैयार होंगे
गर्भ में उसके
उदास किसी पत्ती पर
रात लिखेगी मर्सिया
आने वाले दिनों में

भोर की रोशनी भी
कैद हो जायेगी कल
काली गुफाओं में
दिहाड़ी खटते मजदूर
के पपड़ियाए होठों पर
चस्पां होगी वह
भाड़ में अकेले चने सी
खनखनाएगी, भले वह
हार भी जायेगी

कविता फिर भी लिखी जाएगी
कविता की अय्यारी
उनसे न तोड़ी जायेगी
बड़े से बड़े तिलिस्म की चाबी
ढूंढ़ता वक्त
आएगा बार - बार उसी के पास

इसलिए लिखें आप
लिखते रहें कविता
नक्कारखाने में तूती बोलती रहे ।

## संकट मोचन

उड़ती चील के नाम
मां कहती है संदेशा
चील जिसे ले जायेगी
प्रभु श्री राम तक

मां चाहती है कि संदेशा
श्री राम तक पहुंचे
इसलिए चील से कहती है
कि वह पुत्र की जीवन कामना से
निर्जल उपवास थी आज

पर चील क्यों जाएगी
चील क्यों कहेगी यह सब
प्रभु श्री राम से
चील तो चील है
मां नहीं सोचती

किसी दूसरी पवित्र सांझ में
वह चलनी से निहारती
चांद से कहती है - सुनो चांद
पति का जीवन रहे सलामत
वह एक और उपवास करती है

चांद चुप रहता है
कहता भी भला क्या
खुद पास उसके जीवन कहां

किसी गुरूवार को
मां रखती है एक और उपवास
और चाहती है परिवार की शांति
किसी शुक्रवार को
प्रसन्न करती है देवी संतोषी को
अपने लिए नहीं, अपनों के लिए

मां नहीं जानती
सारे देवताओं को प्रसन्न रखना
सिर्फ उसके जिम्मे क्यों है
वह तो संकट मोचन की भूमिका में
वैसे ही इस्तेमाल होती है
जैसे राम रथ में प्रभु श्री राम ।

## फैसला

दीवार से टिकाकर पीठ
जब रखता हूं हाथ अपने सिर पर
मुझे आशीर्वाद देते हैं दुनिया के सारे देवता

लड़ाई की थकान कपूर सी उड़ जाती है
लड़ाई के दृश्य बदलते हैं परदे पर

सामने होते हैं बुश ब्लेयर वाजपेयी बुद्धदेव
बहुत - बहुत और लोग भी

नहीं होता कोई साथ
पिता भाई मां बहन दोस्त यार

यह लड़ाई कैकेयी को दिया दशरथ का
कोई वचन नहीं जिसके लिए
चौदह वर्षो का वनवास लेना होगा राम को

यह लड़ाई किसी किशोर राजपुत्र के अकेले
चक्रव्यूह मे घुसने की नियति भी नहीं

यह कोई स्वस्थ विरासत भी तो नहीं
जिसे सौंप दूँगा बेटे को
या सिन्दूर की तरह भर दूँगा
पत्नी की मांग में

इस लड़ाई का कोई फैसला
अब हो ही जाना चाहिए

यह आशीर्वाद की बेला नहीं है
यह सिर पर हाथ रखने का वक्त नहीं
यह हाथों के सिर से ऊपर उठने का वक्त है।

# इसलिए निकला हूँ

दरअसल
उम्मीद के सूरज का नहीं होता
कोई अस्ताचल

पूरब से निकलकर पश्चिम में
डूबती है हमारी सोच
हम पाते हैं एक रोज
कि सोच कितनी गलत थी

दरअसल
सूरज न डूबता था कभी
न निकलता ही था कभी
डूबते निकलते थे हम ही
अपनी सोची हुई दुनिया से

हमारे बच्चे आज भी
स्कूलों में रटते हैं
पूरब पश्चिम की झूठी
परिभाषाएं

इसलिए निकला हूं
कि दिखाऊँ उन्हें
उम्मीद का वह सूरज

बच्चे गढ़ें दिशाओं की
नई परिभाषाएं
जो शब्दकोषों के बाहर
उनके इंतजार में हैं ।

# संत बनने की सनद

जो संत नहीं, वे ही बनाते हैं संत
वेटिकन के कारखाने में
ईश्वरीय आशीर्वाद का प्रसाद बांटते पोप

पोप के हाथ में सनद
सनद मे मोनिका, मोनिका में भारत
भारत जुड़ता है वेटिकन से

संत बनने की पहली सीढ़ी
चढ़ती हैं मदर टेरेसा मृत्यु के बाद

इस तारीख में धूसर रहेंगी
जॉर्ज बुश से लेकर दाऊद इब्राहिम तक की खबरें

बिसरा दी जायेंगी इस तारीख में
सुष्मिता विश्वास, विकास कर्मकार की मौत की खबरें

शायद न पहुंचे वेटिकन तक
वाजपेयी का बयान, इस तारीख में

किसी भी संत के कद से बड़े कद वाली
आत्मा को भला क्या फर्क पड़ता है
संत कहलाने से

वेटिकन में कारखाना चालू है
कारखाने से पैदा संत के लिए जरूरी है
चमत्कारी और अतिमानवीय होना

मोनिका तभी तो चमत्कार से होती है दो - चार
मदर टेरेसा की तस्वीर करती है वह काम
न कर पाये जो दवा - दारू

वेटिकन में चालू है कारखाना
और दुनिया के सामने है सवाल
फर्क किसे पड़ता है
दुनिया में एक और संत पैदा होने से

शायद वह मोनिका है
शायद वह सेलकू है
शायद वह गोपीनाथ है

मोनिका के कच्चे घर की छत पर
चमचमाती टिन कह रही है कुछ

मोनिका संत बनने की सनद है
सनद है इसलिए संत के करीब है
मोनिका हवाई यात्रा पर है इस तारीख में
और सड़कों पर है
मोनिका जैसे आदिवासियों का जुलूस

मदर टेरेसा के शहर में
जुलूसों पर लगी है रोक, इस तारीख में

कोई कहता है
मोनिका पोप के बगल में
संत बनने की सनद है

सनद होती है आखिरकार
महज एक दस्तावेज ।

## हम कर भी क्या सकते हैं

भोर के फलक पर रात का
गर्भपात होने के बाद
जब लुढ़कने लगे सूरज
किसी हत्यारे समय में
हम कर भी क्या सकते हैं।

पांच सौ पैंतालिस कुर्सियों वाले
उस गोल घर में
जब सवा सौ करोड़ लोगों के नुमाइंदे
जोकर और भांड़ बन गये हों
हम कर भी क्या कर सकते हैं।

नीली आंखों और गुलाबी सपनों वाली
लड़कियां व्यस्त हों
जब अपने - अपने प्रेमी फांसने में
जनसंपर्क में दक्ष अपनी मांओं के साथ
हम कर भी क्या सकते हैं।

आस्तीनों में पाले हुए सांप
जब उतारने लगें जहर
हमारी ही नीली नसों में
और लहू के लाल रंग पर हो खतरा
हम कर भी क्या सकते हैं।

बेहतरीन कविताएं भी घुटने टेक
जब पराजित सी खड़ी हों
और नजरों के बुझते अलाव में
न भभके कोई एक मद्धम चिंगारी
हम कर भी क्या सकते हैं।

सचमुच हम कर भी क्या कर सकते हैं
सिवाय इसके कि लिखें
कुछ और बेहतर कविताएं
इस कठिन और बंजर होते समय में।

# आग और सपना

आग और सपनों की
नहीं होती कोई जात

आग जंगल की तरह
फैल सकती है मय समंदर

सपनों की बारात
उस आखिरी बचे आदमी की
आँख के दरवाजे सजती है
और पसर जाती है
कातिल की छुरी से निकल
फूलों की मुस्कान में

आग और सपनों का
एक रिश्ता है

षोड़सी की आँखो में
बचे रहते हैं सपने
जैसे बोरसी की राख में
बची रहती है आग

आग और सपनों की
नहीं होती कोई जात

बोरसी की आग घर - घर
जलाती है चुल्हे

षोड़सी की आंखों में
जीवित रहती है आदमी होने की
पहली और आखिरी पहचान ।

## मेले से आई लड़कियां

जब कि रास्ते दो ही थे
उन्हें चुनना था एक को
वे मेले से बाहर आना चाहती थीं

एक रास्ता उन्हें लाता
मेले के चमक - दमक में
उनके होंठ तब इस तरह
सूखे - दरके नहीं रहते

दूसरा रास्ता जाता
मेले से बाहर की दुनिया में
जहां खरीददारों की मर्जी चलती

उन्होंने बिक जाने को
बचे रहने के पक्ष में चुना

एक लड़की जुट गयी आखिरकार
बाबू साहब के लिए
वे लड़की को सोते - जागते
ओढ़ते - बिछाते, खाते - पीते
और डकारते

लड़की भूलने लगी
मेले से पहले के बसंत
जबकि बसंत उतर चुका था
उसके तन - मन में
बदलता हुआ करवटें

लड़की ने प्रेम किया था
यदि यह किंवदंती सच है
लड़की ने पीठ पर ढोई थी
धूप की गठरियां

छांह की हत्या भी कर डाली
चिलचिलाती दोपहरी में

लग गया था मेला
सावन के अंधे बाबू साहब
रहने लगे गूँगे

मेले से आई लड़की
फिर आई मेले
जिस राह गई थी मेले से बाहर।

## मतलब की बात

संदर्भ से कटा मुख्य विषय
उस छूटी बात जितना ही
होता है अधूरा
जितने में हो सकती है बात
दुमका की
दिल्ली कोलकाता पटना के बरक्स

आप फर्ज करें
कि दिल्ली वाले कोलकाता को
नहीं मानते सुंदर
कोलकाता वाले भी पटना को
नहीं कहते सुंदर
पटना वाले दुमका को इसी तर्ज पर
सुंदर नहीं कहते

जब आप कहते हैं
अमुक आदमी सुंदर है
एक ऐसा आदमी
आप खड़ा करते हैं
उसके बरक्स, जो सुंदर नहीं है

जिसे सुंदर नहीं मानता
आपका सौंदर्यबोध, लेकिन
जो फिर भी आदमी है

जब आप कहते हैं
अमुक चीज सुंदर है
एक बात छूट जाती है
जो आप नहीं कहते
लेकिन जो मतलब की बात है।

## साजिश में अध्यात्म

अगली बार गांव जाने तक
फिर कोई बगीचा
ऊसर की चादर ओढ़ चुका होगा

अन्न प्रसवा माटी
रेत के तहों में दबी होगी

उनकी मैली - कुचैली
कथरियां धुली जा रही होंगी

अब बाग बगीचे
गांवों की पहचान कहां रह गये

मृतकों के घण्ट
किस पीपल से लटकाये जायेंगे
इस सोच में डूबा होगा गांव

आम का वह आखिरी पेड़
लिख रहा होगा अपना त्यागपत्र

वनस्पतियों का पलायन
ग्राम देवता के कानों में अलार्म सा
बजता होगा

और सारा गांव किसी साजिश के तहत
अध्यात्म में डूबा होगा।

## मोर्चा

सुन कर अच्छा लगता है
कि दिल का मोर्चा बांयी ओर होता है
लहू का रंग लाल होता है

लेकिन नारों की गर्मी से
नहीं गलने वाली है दाल

देखना होगा
दिल के पेंच किस ओर खुलते हैं
किसके लहू में कितना नमक है

लहू में कैद रहता है जो लोहा
हमको तुम्हारे करीब
खींचता है कि नहीं

लोहे की जगह आयोडिन
लहू में स्थापन्न है कि नहीं

लोहा लोहे को काटता भी है कि नहीं ।

# महामहिम सावधान

ध्वंस स्तूपों में भी
बची रह जाती हैं सभ्यताएँ

सभ्यताएँ हर हाल में
बचा ली जाती हैं
महामहिम सावधान ।

महामहिम सही फरमाते हैं
कि आप दुनिया को
सभ्य देखना चाहते हैं

लेकिन बेबीलोन से आपको
बहुत कुछ सीखना है
बसरा के खूबसूरत गुलाब
जलने के बाद भी वहां
खुशबूएँ जिन्दा हैं ।

आपकी बिल्ली का नाम
इंडिया है
मैं आपत्ति दर्ज करना चाहता हूँ
इंडिया से भी आपको
बहुत कुछ सीखना होगा ।

श्वेत भवन में आपकी कुर्सी पर
कोई लोकप्रिय राष्ट्रनायक
अपनी सहायिका के शरीर विन्यास को देख
स्खलित होता है
तब इंडिया में किशोर
फेफड़ों की हवा कंडोम में भर
गुब्बारे उड़ा रहे होते हैं
किशोरियां आज भी इंडिया में
देवलिंग पूजती हैं
उस पर जल बेलपत्र चढ़ाती हैं ।

आपने इंडिया के उस अभिमानी ऋषि
विश्वमित्र की कथा सुनी होगी
अप्सराओं के नृत्य उसे
स्खलित नहीं कर पाते थे

स्वर्ग को नीचे उतारने का
उस जिद्दी ऋषि का एजेंडा
इंडिया में अधूरा पड़ा है
महामहिम सावधान ।

# दाढ़ी

अपराधी नहीं काटते दाढ़ी
दाढ़ी सन्यासी भी नहीं काटते

दाढ़ी में रहता है तिनका
तिनका डूबते का सहारा होता है

दाढ़ी वे भी नहीं काटते
जिनके पास इसके पैसे नहीं होते

दाढ़ी सिर्फ दाढ़ी नहीं होती
यह इतिहास के गुप्त प्रदेश में
उग आई झाड़ी है

इस झाड़ी में छिपे बटेर
ढूंढ़ रहे हैं शंकराचार्य
ढूंढ़ रहे हैं शाही ईमाम ।

# प्रसवमुखी कविता

संगीत के सुरों पर
गले की पेशियां थिरकती हों
तारों पर अंगुलियाँ विद्युत सी कौंधे

राग का उन्माद
मस्तिष्क के तन्तुओं में
तरंगित होता रहे

कि तार ही टूट जायें
गले की पेशियां खिंच जायें
राग बिखरने लगे

कोटि - कोटि प्रारब्ध
लिखे जाने से पूर्व मिटें
ईश्वर की भाषा मनुष्य गायें

शब्दों का ढेर
पार्थिव शवों में परिवर्तित हो
साहित्य के श्मशान में

कवि गा रहा हो
आशा के गीत
चाण्डाल जलाये देवताओं के लिए दीप

समय गर्भ धारण करे
प्रसवमुखी हो नयी कविता
अनुपम, अद्वितीय, अनिंद्य, देवोपम सौंदर्य से बिंधी ।

# रात

आज की रात
जागने की रात है
सर्द रातों के इतिहास में इसे
सबसे ऊपर दर्ज होना है।

आज की रात
सोचने की रात है
बंद कमरों और रास्तों के
बीच की दूरी ।

आज की रात
रचने की रात है
बारूदी गंध के गीत ।

आज की रात
निर्माण की रात है
हथियार बंद एक दस्ता ।

आज की रात
सीखने की रात है
जमीन खोदना, ज्वालामुखी के
मुँह बंद करना ।

## ताश के पत्ते

धूप चढ़ चुकी
जिस हद तक चढ़ सकती थी
मैदानी घासों पर

गोल बाँधकर, लोग
ताश खेल रहे हैं
ताश के पत्ते पिट रहे हैं

माथे पर लोगों के
लकीरें सिकुड़ती
दूध पीते बच्चे की शक्ल में
बदल रही हैं

धूप उतर जायेगी जब
ताश के पत्ते गर्म हाथों से
छोड़ दिये जायेंगे

लकीरें तब औरत की साड़ी
नजर आयेंगी

यही पत्ते तय करेंगे
उनका रेशमी या सूती होना ।

## बच्चा -1

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से कहा
बच्चे बीसवीं सदी के बिरवें हैं
दूसरे बच्चे ने पहले से कहा
बच्चे इक्कीसवीं सदी की फसलें हैं।

## बच्चा-2

बच्चे के जन्म पर माँ बहुत खुश है
बच्चे का बाप, देखता है
सुस्त होते बाजू, रोटी और प्यार की भूखी जमात
वह बहुत उदास हो जाता है ।

## बच्चा -3

बच्चा देखता है माँ को
गढ़ते हुए रोटी
गोल - गोल आटे के चकवे
ग्लोब की तरह घूमते हुए
जिस पर उसका घर कहीं नहीं दिखता ।

## बच्चा -4

बच्चे देखते - देखते ही समझदार हो जाते हैं
बच्चे दुखी होते हैं अपनी पैदाइश पर,
असमर्थ बाप पर, कमजोर मां पर,
दोहरी व्यवस्था पर किसी दिन अचानक
वे दुनिया के खोखलेपन के खिलाफ
अपने हाथ ऊपर उठा देते हैं ।

## बच्चा - 5

बच्चे इकाइयाँ नहीं हैं
करोड़ों की तादाद में नपुंसक वयस्कों की
बच्चे इन से बहुत अलग हैं
बच्चों में इनसे अलग होने की
पूरी संभावना मौजूद है ।

# बेटी

दरअसल गम थे इतने गहरे
कि रोने की रश्म हो न सकी
और डोली उठ गई ।

विदा हुई जो बेटी
लेती रही हिचकियाँ,
खड़ी रही जो माँ
भरती रही सिसकियाँ ।

वे जो दान पुण्य के भागी
खोलकर बैठे बही - किताब,
किससे कितना लिया - दिया
होनी थीं बातें साफ ।

डोली उठ जाने के बाद
बेटी हुई कल की बात,
आज की थी जो बात
रिश्तों का जैसे उपाख्यान ।

एक जमाना था वह भी
कि लोग - बाग रोते थे,
विलाप का भी था राग
रूदन में थी करूण कथा ।

याद है उस उदास समय में
मां, बेटी, बुआ, चाची,
दादी, काकी सब आपस में
करते थे रोने में संवाद ।

संवाद जो बजता था आंखों में
वह गीत से कम नहीं था,
भूले बिसरे यादों की गाँठे खुलतीं
पानी में ही सब कड़वाहट धुलती।

अब जख्म हुए गहरे
दर्द की दवा हो न सकी
और डोली उठ गई ।

# नया

कुछ नया न होकर भी
नया - नया है घर अबकी दीवाली

दीवारों, छतों से साफ कर दिये हैं
मकड़ियों के जाले

आलमारी से पोंछ दी है जमी धूल
चीजों की जगहें जरा बदल दी हैं

बिस्तर झाड़ - पोंछ कर लगा दिया है
अलग कोने में
आलमारी चली गई है बिस्तर की जगह

बुक सेल्फ का शीशा चमक रहा है
पूरब वाली खिड़की के पास

किताबें और पत्रिकाएँ
करीने से सजी हैं छोटे सेफ के ऊपर

अल्मूनियम का बड़ा बक्सा
हमारी शादी की यादों के साथ है मौजूद
दक्खिन वाली दीवार से सटा

बक्से के ऊपर रजाई-कंबल रख दिये हैं
जाड़े की तैयारी में

सच में जब नया कुछ भी होने की गुंजाइश
न बची हो
ऐसे समय में क्रांति आती है
बिस्तर बदलने की कोशिश में
इतिहास बनता है
चीजों की जगहें बदल देने भर से

अगली दीवाली के लिए सोचता हूँ
कि यह नुस्खा बता आऊँ चुपके से

किसी व्यस्त चौराहे पर
कम से कम एक पोस्टर
जरूर लगा देना चाहिए।

# औरतें

ये अपने सुहाग को
मृत शिशु सी चिपकाये रहती हैं
छाती पर ,

इनकी छातियां बोझ उठाते हुए
थक कर झूल जाती हैं पसलियों से,

इनके जिस्म
खेतों से पसरे रहते हैं
जिनपर कोई विजेता
अपनी फतह का झण्डा गाड़ देता है,

यें खूंटो पर गायों सी बंधी
जुगाली करती हैं
इनकी जुगालियों में
बाबुल की यादें ठहरी होती है,

ये बहुत गुस्से में जब
झगड़ती हैं आपस में
तो पूत - भतार तक खा जाती हैं
जैसे पान के बीड़े चबाती हों,

ये हमारी औरतें हैं
जो वक्त से पहले ही
बूढ़ी हो जाती हैं,

अच्छे समय का इंतजार करते
झाइंयों से घिरे,
इनकी आंखो के कटोरे
गहरे हो जाते हैं,

फिर भी सिंदूर दमकता है
इनके माथों पर

इनकी मांग - जैसे पत्थर की लकीर
इनका सुहाग - जैसे क्यारी में
रोप दिया गया कोई बेअदब फूल,

इनके नाक - कान छिदे रहते हैं
जिनमें दहेज में आई मुंदरी
या सोने चांदी के फूल
किसी सपने की तरह चिपके होते हैं
इनके आखिरी वक्त तक,

बाकी जेवर तो गर्दन - बाजू - कमर
और पांवों से उतर ही जाते हैं
घर - गिरस्थी की आबरू बचाते,

कुल के एक चिराग की बाट जोहते
ये छह - सात बेटियां
जन चुकी होती हैं जब
नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र से
रक्ताल्पता की इन मरीजों को
गोलियों के साथ दूध - दही - फल
और ताजी सब्जियां खाने की सलाह
दी जा चुकी होती है,

सवाल फिर वही
कैसे आयेगा - कहां से आयेगा

नइहर - सासुर के दो छोरों के बीच
सिमटी दुनिया में
ये लम्बे समय से बिछुड़ी
सखियों - सहेलियों से मिलती हैं कभी
तो भेंटती हैं विलापते हुए
और गाती रहती हैं
व्यर्थ गई जिनगी की व्यथा कथा

और क्या कहूं
कि इस कथा में शरीक थीं
मेरे घर की औरतें भी

और फिलहाल
सिवाय हमदर्दी के
मेरे पास
इनके लिए कुछ और नहीं,

लेकिन ये मेरा यकीन करें तो
इन्हें बताना चाहूँगा
कि दुनिया जिस दिन
मेरे जैसे हमदर्दों के
एक इशारे पर बदल जायेगी
मैं इन्हें आदम के उस बगीचे में
छोड़ आऊंगा
फिर से नई दुनिया शुरू करने के लिए ।

## विमर्श

वह एक दरवाजा है,
जिससे हो कर आता जाता रहता है समय ।

किसी भी कालखण्ड में वह दरवाजा
खुला रहता है या खोल दिया जाता है ।

जैसे खुला था त्रेता में
सतीत्व की परीक्षा के लिए - धरती के फटने तक ।

जैसे खोला गया था,
अपने जंघों पर बैठाने का निमंत्रण देते हुए, द्वापर में
- देवता के अवतरण तक ।

दरवाजा नहीं जानता,
कि उसकी मजबूती या कि आजादी
उसके दुर्ग बन जाने में है, जहाँ
अबाध आने जाने पर रहती है रोक टोक ।

दरवाजे की मजबूती के रास्ते में
खड़ी हैं अदम्य इच्छाएँ,
जो चाहती तो हैं बन्द करना दरवाजे
लेकिन जिन्हें कुंडी ताले नहीं स्वीकार ।

# उस दिन

बात उन दिनों की है
मांडा के राजा की अचूक सियासी चाल से
जब मंडल - मंडल नहीं हुआ था देश ।

बात तब की है
सनातनी राजनेताओं के कमण्डल से
जब नहीं निकले थे राम ।
उस दिन काली मारा गया ।

यूं तो वह अजनबी नहीं था
इस पुरबे के लिए
आना जाना था, सलाम - बंदगी थी
और कम नहीं था कुछ रूतबा
फिर भी मारा गया वह ।

न कोई तलब, न तहकीकात,
दूसरे ही दिन
बारह - पन्द्रह कुनबों की बस्ती में
जलती रही आग।

यह कुम्हारों की बस्ती थी
वे आग से खेलते थे,
मिट्टी के पक जाने के लिए जलाते थे आँव ।
उनके दिलों में हरे भरे रहते थे घाव
वे बकरियाँ और मुर्गियाँ पालते थे
उनके खूँटों पर
किसी ने नहीं देखी गाय पहले कभी
और वे इन्हें अपनी बेटी से कम नहीं चाहते थे ।

इस चाहत का अन्दाजा नहीं था काली को
उस दिन काली मारा गया ।
यूं तो काली का मारा जाना
इतिहास के लिए नया नहीं था,
बस यह चाहत नई - नई थी ।

# घंटी

बजती है घंटी
प्रार्थना का समय है

करबद्ध यह जम्हूरियत
किसके सजदे में खड़ी है

बजती है घंटी
घंटी के बजने के साथ - साथ
बच्चे पढ़ते हैं इतिहास - भूगोल

घंटी के बजने का मतलब
गणित वाले मास्साब का आना है

सवाल है
श्यामपट्ट है
खड़िया है

देश के लिए सभ्य नागरिक
बनाने का कारखाना
चलता है घंटी से

बजती है घंटी
खुलते हैं टिफिन के डिब्बे
खुलती हैं पानी की बोतलें

बजती है घंटी
मिलती है सांस लेने की फुर्सत ... ।

## धुँआ ..आग ..रोटी

बहुत धुँआ है शहर में

तो क्या आग भी है बहुत
शहर के सीने में ?

है अगर आग
तो क्या सिंकती हैं रोटियाँ भी
शहर में ?

चलो, तुम कहते हो सही तो
रोटियाँ होंगी जरूर शहर में

लेकिन कॉमरेड
अभी - अभी जो मर गया
शहर का नवीनतम नागरिक
सरकारी अस्पताल के जनरल वार्ड में

उसकी मौत की वजह
क्या है ? धुआं ..? आग ..? रोटी ..?

इन तीनों कोणों के बीच में है
मौत की वजह
जिसे पॉलिटिक्स कहते हैं

मैंने झूठ तो नहीं कहा न ?

# सन् 77 के बच्चे

गाय - बछड़े की जोड़ी
सन् सतहत्तर में
हल जोतते किसान के
थी सामने ।

गाँव के किनारे
नहर से लगी कच्ची सड़क पर
धूल उड़ाती गाड़ी में
आये गाय - बछड़े वाले ।

शाम ढले धुंधलके में
चौपाल में बैठे
हल जोतने वाले किसान के
हमदर्द ।

गांव अगली सुबह तक
बँट गया था
गाय - बछड़े और हल - किसान में ।

मर्द, औरत, अल्हड़, बूढ़े
बँट गये सब

नहीं बटे तो सिर्फ बच्चे
गाँव में घूमते
पाली बाँधकर लगाते नारे
सुबह गाय - बछड़ा
शाम हल - किसान ।

## थोड़ा - थोड़ा

थोड़ा - थोड़ा जीते हुए
थोड़ा - थोड़ा मरने का
त्रासद समय है यह ।

मरना जीने की शर्त है ।

जीते हुए तुम्हारे साथ
मरने की बात लेकिन
याद कहाँ रहती है ।

जीना सपने देखना है ।

सपने से गुजरते हुए
मिल जाते हैं लोग
बनती जाती हैं यादें ।

यादें धोखेबाज होती हैं ।

जैसे टूटे नोटों की शक्ल
फुटकर पैसों में नहीं मिलती
टूट जाती हैं यादें भी ।

डोर छूटती है थोड़ी - थोड़ी ।

जीते - मरते हैं थोड़ा - थोड़ा ।

# ताबूत की आखिरी कील

पीछे मुड़ कर
देखना भी
जरूरी होता है
जब कहीं नजर न आती हो
आगे की राह

पत्तों का झरना
फूलों का मुरझा जाना
और
रास्ते में खाई
ठोकरों को याद करना भी
मुनासिब होता है कभी - कभी,

सोनार की सौ मार के बाद
लोहार का एक वार भी
जरूरी होता है

मेरे पीछे एक रात है ,लम्बी,
आगे छटपटाती सुबह,

लोहार के एक वार से पहले
मैं रात को दफन करना चाहता हूं,

मैं उस ताबूत की
आखिरी कील बनना चाहता हूं ।

## दीवार से मुखातिब

दीवार पर लिखी
तकदीर
बदलने की जिद
हर सुबह का आग़ाज़

एक हाथ है
जो लिखता है

एक हाथ है
जो लिखे को
चाहता है मिटाना

जैसे आईने पर जमी धूल
रेशमी दुपट्टे से पोंछती
लड़कियां

फिर
हाथ है
दीवार से मुखातिब

और हसरत है
कि दीवार
हो कोई सुंदर आईना ।

# मेरे देश का नाम

यह कौन सी जगह है
अराजकता के पहाड़ पर
जहां
जनतंत्र के हलक में
आधी शताब्दी से
बनी हुई है प्यास,

तरसते हैं कान
कब बजेगा
प्यासे कण्ठ से उतरते
पानी का संगीत,

जनतंत्र से गायब होते
जन का
यह कौन सा परिदृश्य है
जहां
दुनिया का सबसे मोटा संविधान
जूतियों के तले सिसकता है

यह कौन सी गंगा है
जिसके बेटे की पॉलिटिक्स में
अयोध्या - मथुरा - काशी है,

अशोक चक्र के ऊपर चढ़ा
यह बाज,
बाज के एक पंजे में फूल
बाज के दूसरे पंजे में तीर,

अरे ! इस बाज को उतारो
कोई मेरे देश का नाम तो बताओ ।

## गर्भस्थ शिशु से

ओ गर्भस्थ शिशु
झिल्लियों के पर्दे से
जरा चीखो
देखो कहाँ तक जाती है आवाज

झटक कर बाहें
मींच कर आँखे
जन्मदात्री के जरायु में
उछलो एक बार
देखो दुनिया तुम्हारे लिए है
कितनी बेकरार

कौन कितना सिमट सकता है
तुम्हें जगह देने के लिए

देखो तुम्हारा आना
कितना बड़ा प्रश्न है
फिर भी कोई नहीं चौंकता
कि आना हादसे की तरह नहीं होता

तुम आओ
हादसे की तरह
विद्रोहियों की क्रांति की तरह
उतरो हथेलियों के समतल पर
असमय से पहले ।

# साजिश

तुलसी की नर्म पत्ती पर
देवदूत के आँसुओं को
भाप बनाता सूरज
हमारे सौंदर्यबोध को
अपाहिज कर जाता है

मूल्यबोध भी ऐसे ही टूटते होंगे
पलेव में घुटने तक धँसे
दाँये हाथ हल की मूँठ थामे
बाँये से अनाज छींटते किसान के

वह हर कटौनी पर
बन्नी उधार से निबट कर
एक बढ़ावन जरूर रखता है गल्ले पर
जो कि उसे भूखा रखने की साजिश में
शरीक होता है

उसे समझाना चाहिए
विखण्डित मूल्यों का जवाब
नकाबपोश देवता नहीं दे सकते ।

# महायुद्ध

एक विराट सपना
असंख्य कोशों पर सवार
धमनियों में दौड़ता है
पलकें बहुत भारी हो जाती हैं

करोड़ों जीवित तूफानों की नकेल
बरौनियों से जोड़ दी जाती है
शुरू होता हैं नींद और सपनों का
महायुद्ध ।

## बड़ा

कोई नहीं मानेगा
कि आकाश समा सकता है
दो आँखो में ।

कोई नहीं मानेगा
कि पाताल की गहराई है
हृदय के भीतर ।

यह एक पृथ्वी, कंधे से नीचे
फैलती हुई सीने पर
यकीन दिलायेगी,

मनुष्य बड़ा है
ब्रह्माण्ड से भी बड़ा ।

# कविता

पिता कहता है कहानी
चिड़िया की

चिड़िया रोज सुबह निकल पड़ती है
दानों की तलाश में दूर - दूर तक

चिड़िया रोज ही लौट आया करती है
घोंसले में, बच्चों की खातिर

चिड़िया बनाती हैं घोंसले
बर्फ पड़ने से पहले ही लाती है
ढेर सारे दाने बुरे वक्त के लिए
चिड़िया रखती है ख्याल अपने बच्चों का

'जैसे आप रखते हैं, मेरा ख्याल',
कहता है बच्चा पिता से
क्या यही नहीं है कविता ?

# ईंटें

अपने - अपने नाम की ईंटें हटा लो
इस दीवार में लगे होने का मतलब नहीं ।

अपने नाम की ईंट से हटाओ काई
अपने नाम की ईंट के कर दो टुकड़े
अपने नाम की ईंट उछालो पूरे दम से ।

अपने - अपने नाम की ईंटें हटा लो
इस दीवार में लगे होने का मतलब नहीं।

मैंने अपने नाम की ईंट उछाल दी है दीवार पर ।

# ईश्वरोक्ति नहीं

यह ईश्वरोक्ति नहीं, सिर्फ उनका बयान है
कि हार से पहले
लड़ाई अपने हक में
मोड़ सकता है आदमी ।

जितना वह समझता है
उससे ज्यादा उसे
खुद के बारे में बताया जाता है ।

प्यार से बड़ा सच
जिसे स्वार्थ कहते हैं
यह सिर्फ उनका बयान है ।

गिरगिट से भी तेज
बदलते हुए रंग
वह अपना कद भूल जाता है ।

कई बार आदमी का कद
ईश्वर से भी बड़ा पाया जाता है
जब गिरकर खड़ा होता है
अपरिचित किसी का हाथ पकड़

जैसे कि हम साथ हैं
याद रहे, यह ईश्वरोक्ति नहीं
सिर्फ उनका बयान है ।

# घर में बारिश

बादलों ने बनाये हैं घर
पलकों में
हो रही है बारिश
और देश में आई है बाढ़ ।

बाढ़ आती ही रहती है
और जब नहीं होती है बाढ़
तब होते हैं सूखे

देश के मानचित्र पर
टँग जाता है रेगिस्तान
सपनों का ।

फिर छाते हैं बादल
पलकों के फलक पर
फिर होती है बारिश देश में ।

## मेन होल में घुसा आदमी

चाहता तो मैं भी यही हूँ
कि मेन होल में घुसा वह आदमी
साबुत बाहर निकले ।

वह आदमी जो जानता था
कि किसी की नाक पर बैठकर
उसका चेहरा पोंछना
कितना बचकाना लगता है
और यह कि मुट्ठी में आग
लेने से फफोले छलछला आते हैं ।

फिर भी उसने ऐसा ही कुछ
करना चाहा
यह जानते हुए भी
बाँस की फट्ठी और लाल गमछा
जिनके साथ वह अंदर घुसा है
थक हारकर उसकी शवयात्रा के
सामान बन सकते हैं
लेकिन किसी को तो पहले
घुसना था व्यवस्था के मेन होल में ।

वह आदमी एक मुकम्मिल इंसान है
जो पत्थरों से टकरा कर सिर
एक लाल निशान छोड़ जाना चाहता है
जो कभी इंकलाब का परचम बन लहराये ।

मैं चाहता हूँ, जब वह बाहर आये
तो सबसे पहले बढ़ कर
उसका परचम थाम लूँ ।

# आंख के गहरे पानी में

इतने ख्वाब कहां जाते हैं आंख के गहरे पानी में,
उतराती और डूबती सांसे आंख के गहरे पानी में ।

उसके लहू का खारापन और उसकी अश्कों के मोती,
सागर भी बौना लगता है आंख के गहरे पानी में ।

आज मिला तो उसने अपना हाल कहा दो लफ्जों में,
जीवन का लेखा - जोखा है आंख के गहरे पानी में ।

मेरा बीता कल और अपना आने वाला कल देखो,
हर तसवीर नजर आयेगी आंख के गहरे पानी में ।

राहों में मुश्किल आयेगी सोच के उसने समझाया,
सपनों की तैराओ नैया आंख के गहरे पानी में ।

ममता की मीठी यादें और बचपन के नमकीन ख्याल,
बाबा के मजबूत इरादे आंख के गहरे पानी में ।

## ‘किट्टू’ के लिए

सपनों की उम्र लंबी हो गई
जिन्दगी छोटी होने का गम नहीं
सपनों का अंकुर फूटा है
रोशनी की फसल आंखों में
तैरने लगी है
इस रोशनी का नाम ‘किट्टू’ होना चाहिए।

## तुम (1)

खेतों से गुजरते हुए
लगा कि तुम्हारी देह
धानी फसल में
तब्दील हो गई है
और फूटने लगी है
पकते अनाज की खुशबू
मेरा सपना
फिर जी उठता है ।

## तुम (2)

मेरी नींद
फसल और भूख के बीच
समीकरण तय करती है
सपने लंबी करते हैं
चाहत की उम्र
उम्र जो इन खेतों से बड़ी नहीं
ये खेत जो तुम्हारी देह से छोटे
क्यारियों में बंटने लगे हैं
देखो
क्यारियां नसों में बदलने लगी हैं ।

## सच है

नहीं
यह गलत है
कि मैं समुद्र होना चाहता हूँ

ज्वार भाटे की राजनीति
मैं नहीं चाहता

हाँ
यह सच है
कि समुद्र के बीच
ठीक उसके छाती पर
मैं टापू - सा खड़ा होना चाहता हूँ

## कौन मानेगा

जानता हूं
सुबह का यह सूरज
ढल जायेगा शाम तक

लेकिन इस बीच
दोपहर की लम्बी तपन में
हड्डियों के पसीजने की बात
कौन मानेगा ?

# खुशियों की उम्र

खुशकिस्मत हैं वे
थाना - कचहरी - अस्पताल
चक्कर लगाते
जिनके पैरों के तलवे नहीं चटक गये

खुशकिस्मत हैं वे
जिनके घर, नहीं
कैंसर का कोई मरीज
तिल - तिल कर मरता
आँखों के सामने

खुशकिस्मत हैं वे
कि रातों - रात बंद पड़ गये
कारखाने के मजदूर नहीं थे वे

वे खुशकिस्मत हैं
कि चैन से सो सकते हैं कमरे में
धूप और सर्दी से बेअसर
जबकि दुनिया में
जुलूस लगातार बड़े हो रहे हैं
मुट्ठियां लगातार उठ रही हैं हवा में

वे सचमुच खुशकिस्मत हैं
कि दुनिया के तमाम बदकिस्मत
नहीं जानते उनका गुप्त ठिकाना
जहाँ नीली रोशनी में
सुनहरे हाथ गढ़े जाते हैं

लेकिन उनकी खुशकिस्मती पर
सिर्फ अफसोस किया जा सकता है

जुलूसों में हाथ तन रहे हैं उपर
और खुशियों की उम्र ...?

## हाथ

हाथ सुंदर लगते हैं
जब होते हैं किसी दूसरे हाथ में
पूरी गरमाहट के साथ

हाथ खतरनाक लगते हैं
जब उतरते हैं किसी गर्दन पर

हाथों को पकड़ने की कोशिश में
पाता हूं
कि उग आया है जंगल हाथों का
गर्दन के आस पास
और दुनिया
हाथों के जंगल में बदल गई है

वह जंगल हमें बुलाता है बार - बार
अब बचने का मतलब है
हाथों के जंगल से बच कर निकलना

बचना है तो
पैरों से लेने होंगे काम हाथों के
दुश्मन को पहचानने के लिए
चिपका देनी होंगी आंखे उन हाथों में
जो फिलहाल हैं गर्दन पर ।

## पिता का पत्र

सोचता हूं क्या लिखूँ उत्तर में
पिता का आया है पत्र जब से

पत्र में बोलता है चेहरा
चेहरे से लापता हैं कोमल रेखाएं
रेखाएं निर्मम दिल्ली की सड़कों सी
पेशेवर भाषा में करती हैं संवाद

कुशल क्षेम की भाषा पत्र में
सिरे से दिखती है गायब

गायब है पत्र से हाल चाल लेती
वह नर्म मुलायम बातचीत

सिर्फ हिदायतें होती हैं अक्षरों में
जो पत्र के साथ रचती हैं परिधि
परिधि के बाहर खड़ा किया जाता हूं
मैं, केन्द्र में बोलता है चेहरा

चेहरा सूचना की भाषा में
रखता है एक परियोजना
कि गुड़िया की शादी की खातिर
बंद हों तो हों अन्य सारी परियोजनाएं

कैसे मुमकिन है यह, पूछता हूँ खुद से
पिता का आया है पत्र जब से ।

# मां

प्रेमिका के लिए लेकर
मां का कलेजा, जाते हुए
जब बेटा खाता था ठोकर

बोल उठता था कलेजा
बेटा, चोट तो नहीं आई,

तब से अब तक, दुनिया
बदल चुकी करवटें

प्रेमिका के दरवाजे से
खाकर ठोकर, बेटा
लौटता है मां के पास

मां आश्वस्त होती है कि
लौटना है विश्वास की वापसी

विश्वास लेकिन छलता है
मां - बेटा दोनों को
बीच में आता है बाजार

जिगर के टुकड़े का जिगर
अब चाहिए मां को

हार जाते हैं जिगर वाले
जीत जाता है बाजार
चोट दोनों ही खाते हैं।

## साबरमती का संत

साबरमती के संत को आखिरी बार
देखा गया गोधरा में
वह फूटे चश्मे से देख रहा था
जलती साबरमती एक्सप्रेस
उसके कमरों में जलती लाशें
जिनमें एक संप्रदाय अपने बच्चे - बूढ़ों समेत
आग की भेंट चढ़ रहा था

साबरमती के संत को आखिरी बार
देखा गया गोधरा में
वह टूटी लाठी से रोक रहा था
दंगाइयों की भीड़
जिनमें एक संप्रदाय ईंधन बना आगे बढ़ रहा था

साबरमती के संत को आखिरी बार
गोधरा में देखा गया
वह संख्याओं के गणित में उलझा
'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' गा रहा था

साबरमती का संत आखिरी बार
दे रहा था आमरण अनशन की चेतावनी
आग गोधरा से पूरे गुजरात में फैल रही थी
जलाती गांव - गांव, शहर - शहर

साबरमती के संत को आखिरी बार
गुजरात के दौरे पर देखा गया
वह दौड़ रहा था गांव - गांव, शहर - शहर

आग की लपटों में घिरा
कच्चे सूत में लिपटा वह इकहरा बदन
सोच रहा था 'नाताल' से 'चंपारण 'तक के संदर्भ

साबरमती के संत को आखिरी बार
'लाहौर के दंगे 'याद आ रहे थे
उसे 'नोआखाली 'याद आ रहा था ।

# अच्छी कविता की जरूरत

कांपते से हाथ, शंकित हैं
मासूम खिलखिलाहटों के भविष्य के प्रश्न पर
सफेद होते बाल व्यथित हैं
अपनी नस्लों की सुरक्षा के सवाल पर
और पूरी दुनिया चिंतित है
मानवता के सरोकारों से

लिखते हैं गुलाबी खत पर
लाल चूड़ियों वाले खनखनाते हाथ
दुनिया को दुनिया बनाये रखने के लिए
एक अच्छी कविता की जरूरत है

वह जोड़ सकती थी मेरे - तुम्हारे अतीत
बन सकती थी सागर - सेतु
वह ढ़ाई आखर के तिलिस्म में
कहीं गुम सी है, ढूंढती सांसों का बसंत
सहेजती रिश्तों का शरद काल

वह प्राणों के तार पर फेरती है अंगुलियां
फूटता है राग, प्यार को प्यार बनाये रखने के लिए
एक अच्छी कविता की जरूरत है

एकात्म होने लगते हैं स्मृति के अक्षर,
माथे की सिलवटों के साथ

कह जाती है, प्रेरणा उत्तप्त कानों में
जीवन को जीवन बनाये रखने के लिए
एक अच्छी कविता की जरूरत है।

## पोखरन - 1

हंसो बुद्ध हंसो
तुम्हारी मुस्कुराहट में
सिकते को बारूद कर देने की अदा
मुग्ध कर रही है जन - जन को
उन्हें महाबलियों की सभा में
अपना कद ऊंचा दिखने लगा है
हंसी के जवाब में
आमलेट तैयार हो चुका है
चगाई की पहाड़ियों पर ।

## पोखरन - 2

बुद्ध चौबीस वर्षों बाद
फिर हंसा
पांच ठहाकों ने फेर दीं
दुनिया की नजरें
सारनाथ की वह सभा
पीढ़ियों बाद अपने उपदेशक से
जानना चाहती है
बोधिवृक्ष की जड़ें कहां हैं ?

## पोखरन - 3

युग पुरूषों की हंसी, युगबोध से परे है
इनकी नपी तुली - हंसी में
पुरूषोचित अहं बोलता है
पृथ्वी - समुद्र - आकाश की मर्यादा का
इन्हें ज्ञान होता है
इसलिए ये शांति - वार्ता की शर्तें
भंग नहीं करते
ये पाताल - सुरंगो में हंसते हैं ।

# गुब्बारे - 1

उस फटे गुब्बारे को
तर्जनी पर पहनिए
होठों से लगाइए

गुब्बारे वाली अंगुली चूसते हुए
पृथ्वी - आकाश की सारी हवा
खींच लीजिए फेफड़ों में

फिर जी उठेगा गुब्बारा
इस बार आकार में छोटा
चिटपुटिया गुब्बारा

उसे फिर फोड़िये माथे पर
किसी दीवाने की तरह
उसे चूमने के बाद

उसे फिर - फिर पहनिए तर्जनी पर ।

# गुब्बारे - 2

लड़की एक नीला गुब्बारा है
जिसे पीला रंग प्यारा है

पीले सूट वाली
उस लड़की के शब्दकोष में
सबसे सुंदर शब्द है 'पिया'
जिसे पुकारते हुए
वह नीला गुब्बारा हो जाया करती है ।

# अनजान हैं जो, मारे जायेंगे

आदमी क्या है
अदद इतिहास का टुकड़ा ।

तुमसे मिलाते हुए हाथ
हम करते हैं बात
तुम्हारे इतिहास से भी,

कि जब करवट बदलते हो
समय के बिस्तर पर
तो इतिहास भी बदलता है करवट ।

यह कैसा मंजर है
कि सभ्यता की सड़कों पर
रौंदे जा रहे हैं इतिहास
इतिहासों की टाप के नीचे,

कहता हूँ
सुनना ध्यान से
इतिहास जब भी होते हैं
आमने सामने - मैदान में,

तय है :

अनजान हैं जो लोग
मारे जायेंगे ।

# मुमकिन है

मुमकिन है यह भी
कि नामुमकिन न रहे कुछ भी ।

कंधे से बित्ता-भर नीचे
जरा बाँये हट के
वह मुट्ठी भर मांस का लोथड़ा,

सौ करोड़ सीनों में
एक साथ धड़के !

एक गति
एक ताल
एक छंद
एक नियम
एक बंद !

सौ करोड़ कंधों के ऊपर
संवेदनशील किन्तु सख्त
आंख - नाक - कान - जीभ वाली
वह गोल - भारी चीज
प्लावित हो भीतर से

और गहन तन - मन में
गर्म लहू का विप्लव
आये, यह मुमकिन है ।

मुमकिन है यह भी ... ।

# रपट

एक रपट लिखवाना चाहता हूँ मैं
कि मेरी देह से गायब है मेरी कमीज

मेरी कमीज से गायब है वह गंध
जिससे मुझे पहचानता था कोई कल तक

खतरे में पड़ी है मेरी पहचान
आप सुनें इस खतरे की आहट

यूं हुआ उस दिन कि
मैं गुजरा फूल की मण्डी से
और चिपक सी गई मुझसे
गंध फूलों की

रूका एक पल को
दरवाजे पर उनके
कि दामन पर पड़े दो चार
छींटे खून के

कमोबेश रोज
वाकया यही होता है

कमोबेश रोज
हादसा यही होता है ।

## यह कविता समय

चिड़िया की चोंच में दबा
तिनका,
सर्दियों के मौसम में बर्फ
के नीचे दबा फूल का
पराग,
डूबते आदमी के फेफड़े की
बची खुची हवा,
मिट्टी की तह में दबी
वह सदाबहार दूब,
तिनका,
पराग,
हवा,
दूब, अर्थात यह कविता समय
इस कविता समय में
कितना मुश्किल है
कविता को बचाये रखना
किसी जरूरी चीज की तरह
ठीक वैसे, जैसे कि
चिड़िया के लिए घोंसला,
अच्छे मौसम के लिए फूल,
जिन्दगी के लिए हवा और
हरियाली के लिए दूब

क्योंकि बुरे वक्त में
काम आते नहीं सिर्फ
जमा किये खाद्यान्न,
पुराने वस्त्र,
पुरानी छत,
पुराने पड़े हथियार
बुरे वक्त में काम आती हैं
पुरानी कविताएं भी

इस कविता समय में
याद करता हूं
खिलजी के दरबार में
तोता - ए- हिंद
जिसके महबूब के घर
रंग का उत्सव हुआ करता था,

नीमबाज आंखों का वो महबूब शायर
जो रोते-रोते सो गया था,
काशी का वह जुलाहा
जलती लुकाठी लिए खड़ा
बीच बाजार

रंग,
आंसू,
आग, किसका है यह कविता समय
किसके पीछे हो लूं मैं,

कौन है मेरे पीछे
क्या पता
उस जनपद के कवि के पीछे-पीछे
ताल्स्ताय और साइकिल का कवि कितनी दूर चला,

मैं आश्वस्त होना चाहता हूं
कि इस कविता समय में
चिड़िया ले आती है तिनके,
हर मौसम में खिलते हैं फूल
डूबते आदमी के दम में हवा
बची है
और मिट्‌टी में उगती है दूब

चिड़िया,
फूल,
आदमी,
मिट्‌टी, ये सब, हाँ यही सब
आने वाले दिनों में
बचायेंगे कविता को।

## शेरपा - एक

ढलान पर था लामा
पहाड़ी रास्ते पर
रक्तिम परिधान
ने चखा न था
स्वाद पसीने का,
स्वाद नमक का
उसकी जीभ को पता है

क्या करता है लामा
कैसे रहता है विशाल
इस मठ में बिना दुख के

कितने लामा रहते होंगे
इतने बड़े मठ में
कि जहां छुपने की जगह
भी नहीं पाता है दुख

दुख, जो शेरपा के
जीवन में इस तरह आता है
लगा कर बैठा था घात
जाने कब से भूखे शेर की माँद में

दुख, शेरपा के घर में
सबसे बुजुर्ग सदस्य है
सुख, नाम है जिस मेहमान का
रहता है इंतजार उसका
शेरपा को

चढ़ाई पर था शेरपा
लामा, ढ़लान पर था।

## शेरपा - दो

शेरपा की पीठ पर लदी
एक थकी हुई पृथ्वी
जिसे वह ढोता आ रहा है युगों से
एक दोहरी रस्सी के सहारे

कपाल पर कसी पट्‌टी से लटकती
रस्सी के सहारे
थकी हुई पृथ्वी को ढोते
शेरपा की रीढ़ झुकी रहती है

युगों से तनकर खड़ा नहीं हुआ
शेरपा,
किसी एटलस की तरह
ठगा सा शेरपा
युगों से खड़ा है
ला डेन ला रोड पर।

## शेरपा - तीन

ढलती हुई उम्र में
वह चढ़ाई पर था
समुद्रतल से सात हजार चार सौ फीट
ऊँचाई पर,
सैलानियों के रेलमपेल में
शेरपा को कुछ और नहीं भाता,

न मिरिक झील का विस्तार
न बादल, न बारिश, न पहाड़
उसे क्रिप्टोनेरा जैपोनिका के
आकाश छूते दरख्त भी नहीं लुभाते

उसे बस उतना पता है
कि उसके रास्ते में
बांये हाथ की ओर खाई
और दाहिने हाथ की तरफ पहाड़ है
इन दोनों के बीच
एक रास्ता है जिस पर
उसे अभी और जाना है।

## शेरपा - चार

पृथ्वी के उच्चतम शिखर पर
अपने पैर जमा कर
खड़ा था शेरपा

वह शरीक था, बावन साल पहले
एवरेस्ट आरोहण के
ऐताहासिक क्षणों में

उसे याद करते हुए
मेरी स्मृति में
दाखिल होता है
शालीग्राम पराजुली

वह निष्कपट गोरखा
और हम आइस - पाइस जैसा
कोई खेल खेलते हैं
छब्बीस साल पुराने अतीत में

कद काठी के सख्त मेरे उस
दोस्त का हृदय था उतना ही
नरम, रो पड़ता था वह
जरा सी छेड़-छाड़ पर

मां नहीं थी उसकी,
ऐसा बताते थे
खेलते थे जब आपस में
हम तो, दो भाषाएं भी
खेलती थीं साथ
और झगड़े नहीं कभी
आपस में हम
शालीग्राम पराजुली
वह तुम्हारा पूर्वज ही था
जो पृथ्वी के उच्चतम शिखर पर
बावन साल पहले खड़ा था

अब इस पृथ्वी पर
ढूंढता हूं तुम्हारे
कदमों के निशान।

## शेरपा - पाँच

पहाड़ की उम्र से भी बड़ा
है शेरपा का दुख
बादलों की उम्र से भी छोटी
उसकी खुशियां,

शेरपा के बारे में
सोचते हुए मैं अपनी पीठ पर
महसूस कर सकता हूं
पृथ्वी का वजन और
अपने चेहरे पर गहराती
सर्पिल रेखाएं

एक दुखती रीढ़ पर फेरते हुए
हाथ, मैं सोचता हूँ, आखिर

कितनी चोट पड़ने पर
लोहे में आती है धार,
कितने बसंत देखने के बाद
घर से भागती है लड़की,
और यह कि उम्र के किस
पड़ाव पर विरोध में हाथ उठाना
सीखता है बच्चा,

छन्दहीन इस कविता समय में
दिन की शुरूआत
करता है शेरपा
सुबह की उतरी ताड़ी और
बासी मोमो के साथ
और दिन ढ़ले
कुछ मोगरे के फूलों के साथ
लौटना चाहता है घर
सर्दी, गर्मी, बरसात, हर मौसम में
सैलानियों के इन्तजार में
खड़ा रहता है
किसी घुमावदार मोड़ पर

हर नये वजन के साथ
कस लेता है कमर
पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण को
देता हुआ चुनौती
सही सलामत ले जाता है
सैलानी को
उसके होटल वाले कमरे तक
जहां से पहाड़ दिखता है
खिड़की से बराबर
मैं नहीं गिन पाता
उसके चोट के निशान,
मैं नहीं गिन पाता
उसके बीते हुए बसंत,
मेरे लिए शेरपा की उम्र
सबसे बड़ा सवाल है।

## आंगन - एक

खबर आई थी तार से
आंगन की पुरानी भीत
गिर चुकी थी

गांव से बहुत दूर
आवाज सुनाई पड़ी
अरअरा कर गिरती हुई
माटी की भीत से, और
याद आये लड़कपन के दिन

आंगन में खेलते
एक दुर्बोध सा खेल
(ओक्का बोक्का तीन तलोक्का
लउवा लाची चन्दन काठी......)
वे भीत से घिरे आंगन के
दिन थे, हालांकि
पुरानी भीत के
अनिवार्यतः गिरने के गीत
तब भी गाया करती थी
एक वृद्धा आंगन में, और
जानते थे हम भी कि

नई भीत उठेगी फिर-फिर
और फिर-फिर गिरेगी पुरानी भीत

फिर भी भीत के गिरने की बात
से उदास थे हम,
उदास थे पेड़-पौधे,
चिड़िया, हवा, पानी,
बच्चे, जवान, बूढ़े
फैला हुआ था आंगन
आंगन खुल चुका था
और आंगन के बीच थे
कुछ लोग,
बिल्कुल निर्वसन।

# आंगन - दो

आंगन में रहती थी एक
दुनिया,
जिसे लांघ कर वे
निकल पड़े थे दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता
और अब तक नहीं लौटे थे घर

आंगन को रहता था इंतजार
दुनिया शायद कभी
हो इतनी छोटी,
फिर से गूंजे घर-आंगन
सोहर, लोरी, चैता, कजरी

लेकिन जो छोड़ चुके थे आंगन
उनके लिए दुनिया का आंगन था
खुला-खुला,
दुनिया के खुले आंगन में
वे लोग थे बन्द, अपने-अपने
सपनों के बख्तर में

आंगन इधर रहता था
रूठा-रूठा
आंगन के सन्नाटे को
तोड़ती थी जांता-चक्की की
घरघराहट जिसमें
गेहूं पीसती बुढ़िया गाती थी
कोई राजा ढोलन का गीत
करूण स्वर में
बहुत दिन हुए राजा ढोलन को
घर छोड़े,
राजा के उदास घर - आंगन
कह रहे थे विदा लेते राजा से,
बारह साल बाट जोहने के बाद
वे ढह जायेंगे
इंतजार के तेरहवें साल में

इंतजार के कितने तेरह साल
हर साल बीते, और वह
बुढ़िया जांते पर बैठी
वही करूण गीत गाती है अनवरत

बहुत बेचैन रहता हूं मैं
कि बुढ़िया का गाना बंद नहीं होता

बहुत दिन हुए, मैंने अपने आंगन
की सुध नहीं ली।

## आंगन - तीन

घर के अंतरंग को
पूरी दुनिया से जोड़ता था
आंगन, उन दिनों
(अब पूरी दुनिया ही
अंट सकती है आंगन में)

बिना गुजरे हुए आंगन से
न तो पहुँचा जा सकता था
घर के किसी कोने में,
और न ही मापी जा सकती
थी पृथ्वी,
अपनी समस्त गोलाई में

आंगन, घर और बाहर के बीच
एक जरुरी परदा भी है,
जिसके गिरते ही
दुनिया समा जाती है घर में
और घर बदल जाता है
दुनिया में।

## अकेली स्त्री का दुःख

अकेली स्त्री की
कलाई पर,
वक्त की टिक् - टिक्
नहीं सुनी किसी ने

मौसम की हर करवट
कैलेण्डर के पन्नों से बाहर
पेड़ों पर उगते,
पेड़ों से झरते,
पत्तों में महसूस करती है
अकेली स्त्री,

कपास के ढेर से
बुरे दिनों की यादों के गर्द
अलगाती, वह
अच्छे दिनों की यादों को
नर्म उजले फाहों में
समेट लेना चाहती है।

# हत्यारे को फांसी

उस तारीख में कुछ भी नया न था
कोई चमक न थी

उस दिन भी
धूप निकली तो एक नर कबूतर
अपनी मादा के पर खुजलाता
देखा गया पुरानी मुंडेर पर

गाड़ियां उसी तरह रूकी थीं
सिगनल के इंतजार में

आधी दुनिया बदहवास
थी रोज की तरह
दुपट्टे की हिफाजत की फिक्र में

मधुबनी से आया मंहगू
बहा चुका था ढेरों पसीना
शहर की व्यस्ततम सड़क पर

दोस्तों, सूरज निकलने से पहले ही
दी गई हत्यारे को फांसी
और हत्यारे का नाम
शहीदों की फेहरिस्त में
बता रहे थे अखबार

इस तरह धूप का आखिरी टुकड़ा
विदा ले रहा था आंगन से।

## ऊँचे दाँतों वाली लड़की

ऊँचे दांतों वाली लड़की की नींद में
आता है नीली कमीज वाला एक लड़का

और ऊँचे दांतों वाली लड़की
पंखुरी बन जाती है
महकती है, जंगली फूल की तरह

इस तरह नींद में
नीली कमीज का एक रिश्ता
बनता है ऊँचे दांतों से

वह पाती है
कि उसके सबसे गर्म रिश्ते का
रंग नीला है

वह लड़की आसमान से करती है अनुरोध
कि दुनिया की हर नीली चीज को
वह अपने दांतों में दबा सकती है।

# दिल्ली थी कि दूर थी

दिल्ली उतनी दूर नहीं थी
बात इतनी थी
कि एक फकीर गा रहा था ,
'दूर अस्त'

रात उतनी लम्बी नहीं थी
बात इतनी थी
कि हमें भरोसा नहीं था,
सुबह आयेगी

अंधेरा उतना घना नहीं था
बात इतनी थी
कि लोग खड़े थे एक जादुई मोड़ पर,
जहां सड़क की हजार हजार बांहें
हजार हजार दिशाओं में फूटती हैं

हर बांह का इशारा था
दिल्ली की ओर,
लुटेरों के लिए
कोई दिल्ली दूर नहीं होती
दोस्तों यह घरों को लौटने का वक्त था
और हम थे कि सुबह के इंतजार में थे,
दिल्ली थी कि दूर थी।

# भरोसे की नींद

रोशनदान के उस पार
दिखीं दो नन्हीं बांहें

दो हरी कोंपलें
उस तरफ दीवार पर
उग रही थीं

एक बच्चा पीपल
पचास बरस पुरानी भीत को
फोड़ कर उठ खड़ा था

दुनिया के तमाम बच्चों के लिए
मेरे हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में
उठे हुए थे

मैं आश्वस्त था
कि दुनिया बची रहेगी

जियो मेरे बच्चों
उगो तो ऐसे
कि जैसे दीवार पर
उगता है पीपल
ताकि हम भरोसे की नींद सो सकें।

## जैसे

मेरे सबसे अजीज दोस्त की
आंखों में उमड़ते
ढेर सारे प्यार के बीच
बची रहती है मेरे लिए

थोड़ी सी घृणा
थोड़ा सा फरेब,

जैसे दिन के उजाले में
बचे रहते हैं
अंधेरे कोने,

जैसे फलों की मिठास में
बचा रहता है
थोड़ा सा नमक,

जैसे नमकीन होठों में
बची रहती है
मिठास,

जैसे सफेद से सफेद कपड़ों मे
बची रहती है मैल

और इन सबके बीच
जाने कैसे बची रह जाती है
दोस्ती, आखिरकार।